मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २२९ अंक • अगस्त-२०२६
Volume no. 19, • Issue No. 229 • August 2026

गुरुपूर्णिमा







प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-



एटलान्टा (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते, राजोपचार करते तथा सभा में दर्शन देते अपने प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।



सिनसिनाटी मंदिर में सभा को दर्शन देते प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



बायरन (अमेरिका) मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कैम्प किया गया था ।



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - २० ● अंक : २२९ ● अगस्त-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीहरि के अपर स्वरुपो के मुख से गुरु पूर्णिमा का संदेश	०६
०४.	घाटीला गाँव में पूज्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने कुए के जल को मीठा किया	१०
०५.	प्रसादी का गाँव अंबापुर	१२
०६.	दान - पुण्य	१३
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१४
०८.	भक्ति सुधा	१५
०९.	सत्संग समाचार	१९

अस्मदीयम्

परमकृपालु परमात्मा अत्याधिक दयालु है।

स्वभाव छे स्वामीनो, परदुःखहारी रे, वारी बहुनामीनो
कोईने दुःखीयो रे, देखी न खमाये दया आणी रे ।

संसार के लोग जलवायु के विशेषज्ञो ने तरह-तरह की भविष्यवाणी किये। अन्ततः सब कुछ तो श्रीहरि के हाथ में है। पूरे गुजरात और भारत में वर्षा हुई।

आप सभी श्रीहरि के आश्रित भक्त इस चातुर्मास में अपने प्रत्येक मंदिर में विशेष धुन करियेगा।

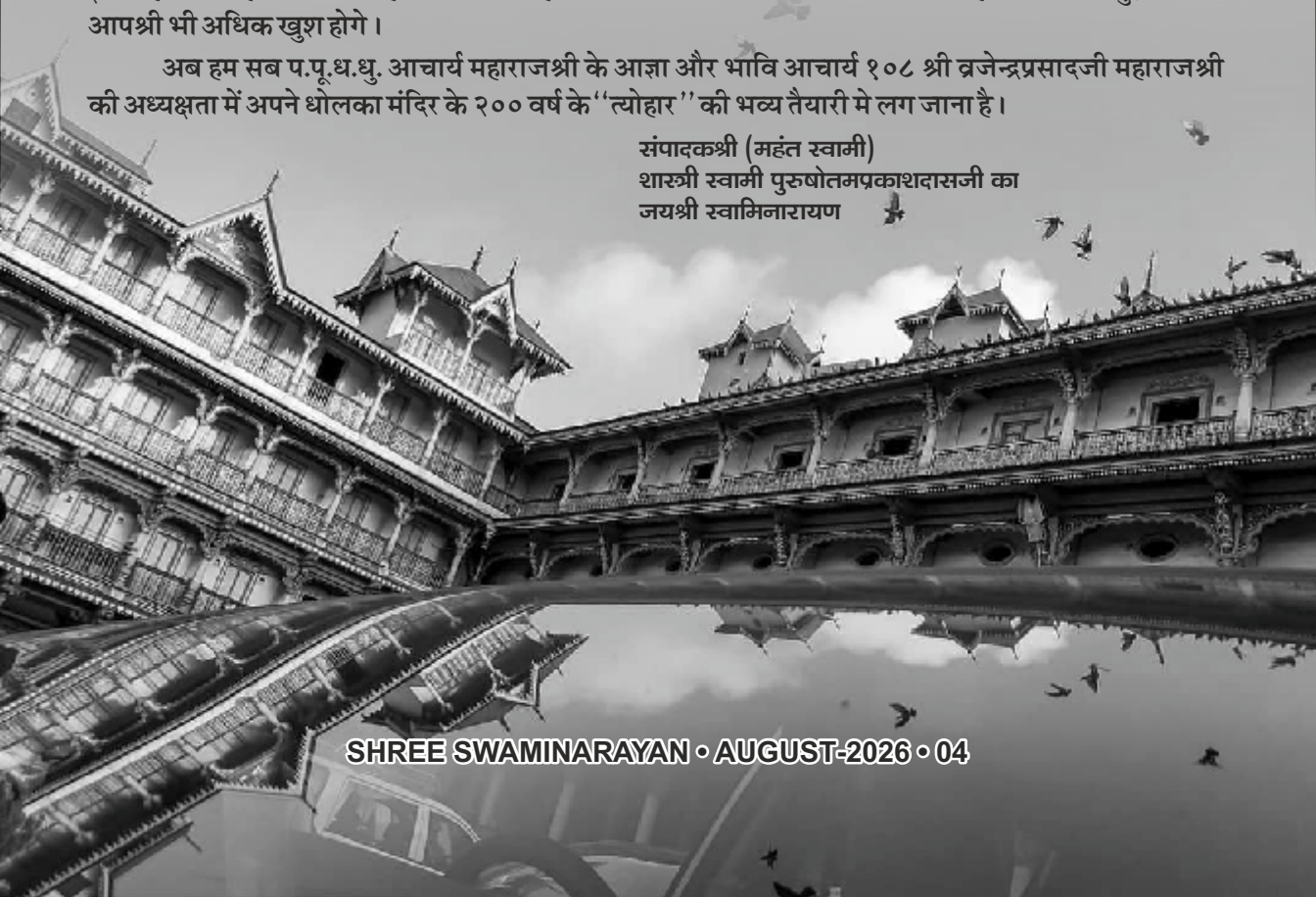
श्री नरनारायणदेव पर्यावरण के लिये अधिक जागृत है। अभी ही प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू लालजी महाराजश्री और पू.श्रीराजा और सत्संगि बहनो के समुदाय के साथ बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री द्वारा छ लाख वृक्षो का आक्सीजन पार्क के लिये वृक्षारोपण किया गया है।

पूरा धर्मकुल प्रतिवर्ष श्री स्वामिनारायण बाग, श्री स्वामिनारायण म्यूजियम, आंबली और अपने विद्यालय - कालेज और अपने निवास स्थान पर नये-नये वृक्ष लगाये जाते है। इसी प्रकार शहर और गाँव के भक्तो को प.पू. लालजी महाराजका आग्रह युक्त सूचना है कि गाँव के तालाब, रास्ते, स्कूल, अस्पताल आदि स्थानो पर वृक्ष लगाकर उसको पूरा संरक्षण प्रदान करें। तथा बडे होने तक खाद-जल की व्यवस्था करे।

हम सभी ने गुरु पूर्णिमा को अपने सभी के गुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजा-अर्चना किये। हमें अब इतना ही करना है। आप को यह अच्छा लगता है कि गाँव-गाँव में सत्संग का पोषण करके हरिभक्तो को खुश करे तो आपश्री भी अधिक खुश होगे।

अब हम सब प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में अपने धोलका मंदिर के २०० वर्ष के ''त्योहार'' की भव्य तैयारी मे लग जाना है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जूलाई-२०२६)



११ से २० श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा (अमेरिका) पाटोत्सव के अवसर पर और बायरन (ज्योर्जीया) सत्संग सभा पर पधारना।

२५ एकादशी को श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

२९ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्री नरनारायणदेव के दर्शन करके सभा में बिराजमान होना। प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आश्रय में संत-हरिभक्तो द्वारा गुरु पूजन-अर्चन विधि उल्लासपूर्वक पूर्ण की गयी।



प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जूलाई-२०२६)

२ पीपलज (गांधीनगर) में अपने अहमदाबाद कालुपुर मंदिर द्वारा वृक्षारोपण के भाग रूप मे आक्सीजन पार्क का निरीक्षण करने हेतु पधारना।

३ से २६ विदेश सत्संग प्रवास।

१६ से १७ सिनसिनाटी मंदिर मे (अमेरिका) सत्संग सभा में पधारना।

१८ से १९ श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२० से २१ टेनीसी (अमेरिका) मंदिरमां सत्संग सभा में पधारना।

२१ से २२ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुईसवील (अमेरिका) पाटोत्सव पर पधारना।

२३ से २५ बायरन (ज्योर्जीया) सत्संग सभा प्रसंगे पधरामणी, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कैम्प स्वयं के अध्यक्ष पद से पूर्ण करना।

२९ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की गुरु पूजा-अर्चना आदि कार्यक्रम स्वयं के उपस्थिति में पूर्ण करना।



श्रीहरि के अपर स्वरुपो के मुख से गुरु पूर्णिमा का संदेश

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री, ता. २९-०७-२०२६ : आदरणीय संतो और प्यारे सत्संगि भाईयो, आप सभीने हमारी पूजा की पूजन के साथ जो आप लोगो का प्रेम है। वही काफी अधिक है । यह सम्बन्ध आज का नही है । २०० वर्ष का सम्बन्ध है। हमारी पहचान किसने करायी । श्रीजी महाराज ने करवाया है। हम तो मूलत: उत्तर प्रदेश के है । उत्तर प्रदेश से धर्मकुल को बुलाकर हमारा हाथ महाराजने आप के हाथ में रखा । आप को हमारी सुरक्षा करना है। और आप लोग रख भी रहे है।

मेरे पास एक अयोध्याप्रसाद दादा का पुराना पत्र है। वह उर्दू भाषा में उन्होने लिखा है। उस समय उर्दू भाषा सरकारी भाषा मानी जाती थी । यह पत्र यहाँ के पुलिस विभाग में पुलिस पर लिखा गया है। जिस में लिखा है कि हम उत्तर-प्रदेश से यहाँ पर आये है । यहाँ की भाषा हमें नही आती है। हम लोग बाहर गाँवोमें भ्रमण करते है। इस लिये हमे पुलिस संरक्षण चाहिए । अभी तो हरिभक्तो का प्रोटेक्शन इतना बढ गया है कि हम पुलिस को प्रोटेक्ट करते है।

वास्तव में गुरु बनना कठिन है। ३५ वर्ष का मुझे अनुभव है। अधिक कठिन है। क्योकि आप को तो केवल धर्म पालन करना है । जब कि हमे पालना तथा पलवाने की जिम्मेदारी है। दो जिम्मेदारी हमारी है। अपने नंद संतो की बातो में कही पर पढे थे । गुरुजब सोलह आने पालन करता है तो शिष्य चार आना या आठ आना पालन करते है । अर्थात् यह कठिन कार्य है । लेकिन श्रीजी महाराज की दया से अपने अहमदाबाद गद्दी की परम्परा मे अपने साथ संत और हरिभक्त का सम्बन्ध बना हुआ है । यह सम्बन्ध दिन-दिन बढता जा रहा है।

सभी की परिस्थिति देखे तो असंख्य गुरु बन गये है। गुरु बनना अच्छा लगता है। पैर लगाना सबसे अच्छा लगता है । एक उदाहरण कहुँ ! कई वर्ष पहले उत्सव के लिये मै छपैया गया था । हमारे साथ परिवार के एक सदस्य थे। ८-१० वर्ष के छोटे बच्चे थे। बाद में हम दर्शन करने निकले स्वभाविक रुप से सभी हरिभक्त पैर छूते थे। यह देखकर बालक को ऐसा हुआ। मेरा पैर क्यो नही कोई छूँ रहा है ? बाद में वह क्या करे ? वह दोपहर में अकेले पैर लगाने के लिये निकल जाते थे । बडे लोग तो नहि छोटे बच्चे को पैर लगवाता था । बोले मेरा पैर छूओ । पैर लगवाने का आनंद आता है।

विशेष तो क्या कहे । हमे पहले एक स्लोगन बनाया था । जब भगवान मानव रुप धारण करके विचरण करते है तो अनंत जीवो का कल्याण करते है। मोक्ष भागी होते है। अक्षरधाम अधिकारी होते है। लेकिन जब मनुष्य भगवान बन कर घुमता है तब खराब होता है। स्वयं तो नर्कमे जाता है। तथा अनंत जीवो को नर्क का भागी बनाता है । अर्थात् इससमयगुरु खोजने में सबसे अधिक सावधान रहना चाहिए। हम सभी के अंदर

महाराज बिराजमान है । कोई प्रश्न होतो उनसे पूछे यह अच्छा है कि नही ? महाराज अंदर से उत्तर देगे । मै तो मानता हूँ कि बडे अपराधी हो उसमें भगवान बिराजमान होते है। यह भी गलत करते है तो अन्तरआत्मा कहती होगी कि यह गलत कर रहा है। लेकिन वह आदमी आवाज को दबा देता है।

हमारे अंदर सर्वावतारी श्रीहरि बिराजमान है । वे ही अपने गुरु है। हम उनका सुनकर उनके अनुसार जीवन जीये तो कुछ करने की आवश्यकता ही नही है। सामान्य भाषा मे कहे तो मुझे लगता है कि एक ऐसा युग आ रहा है कि लोग Guru.com की वेब साईट बना देगे । जिसको गुरु चारिए। इसमें खोज ले। कभीखाली समय में यु-ट्यूब देखने पर आनंद आता है। उसमे अनेक प्रकार के गुरु उपदेशक अनेक प्रकार के अलंकृत वस्त्र पहनकर आते है। यह सब देखने को मिलता है हमें यह सीखना है कि सर्वावतारी श्रीहरि हम सभी को मिले है । तब गुरु खोजे ? अपना इतिहास बताता है। महाराज ने आत्मानंद स्वामी को गुरु बनाया । बाद में पता चला कि ये निर्गुणधारा वाले है। तो उन्हे छोड दिये। पता चला गलत ट्रेन में बैठ गये है। क्योकि हमे अपना कल्याण करना है।

आज आप सभी उत्सव मे आये, प्रेम दिये, वास्तव में आनंद मिला । दूसरी बात कुछ दिन के बाद तिथि के आधार पर लालजी महाराजश्री का जन्म दिन मनाना है। तारीख के हिसाब से उनका आज जन्म दिन है। जेतलपुर वचनामृत में महाराजने कहा है कि सभा का किया हो सकता है । संतो-हरिभक्तो नरनारायणदेव से प्रार्थना करना ताकि वे नरनारायणदेव की गद्दी की शोभा बढाये। आप सभी को धन्यवाद के साथ विराम लेता हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज गुरु पूर्णिमा के दिन पर गाँव-गाँव से देश-विदेश से बड़ी संख्या में हरिभक्त आये है। संत भी अधिक संख्या में आये है। आज का दिन विशेष है। जो अपना सिद्धान्त है। अपनी जो मूल परम्परा है। वह देव प्रधान है। और पद प्रधानता वाली है। अहमदाबाद देश मे मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय मे विशेष विशेषता है। कि व्यक्ति की प्रधानता नही है। पद प्रधान है। मुख्य विशेषता भगवान देव का है।

ये जो अपने सिद्धान्त है । और परम्परा है । इसे बनाये रखना है। यह हमें तथा भावी पीढ़ी का समझाना है। बडे बापु समझा रहे है कि संसार में आज कल सब कुछ अलग-अलग चल रहा है। लेकिन हमे मूल सम्प्रदाय और नरनारायणदेव को छोडकर कही नही जाना है । यदि भटके तो हानि अपनी ही है। देव है तो सब कुछ है। हम सभी भाग्यशाली है कि आज नरनारायणदेव के सामने बैठे है। ऐसे नरनारायणदेव हम सभी को प्राप्त है। और देव का बनकर रहना है।

विशेष मे प.पू. लालजी महाराजश्री जनवरी २७ मे आ रहा धोलका के लिये बड़ा उत्सव ''त्योहार'' को प्रोत्साहित किये थे । देव के प्रति निष्ठावान बने । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना किये थे।

प.पू. महाराजश्री : महाराजश्री की असीम करुणा दया से हम सभी भगवान के समक्ष उपस्थित हुए है । भगवान नरनारायणदेव के आशीर्वाद से यह प्रांगण मिला है।

शास्त्र में जो कहा गया है। कुछ समय के बाद उसमें कमी आ जाती है । क्षेपक बनता जाता है । गुरु पूर्णिमा किस कारण से प्रारम्भ हुई ? या गुगल करना या यु-ट्यूब करना। हम तो चलकर आये है। ठीक हैन ? परम्परा क्या है ? सिद्धान्त क्या है ? इसके पीछे की कथा नही करना है। संत भी वही कहे। जब तक आप देखेगे नहीं तो याद नही रखेगे। कि गुरु पूर्णिमा क्यो मनाई जाती है। यह जानकर परम्परा बनाये रखना है । ज्ञान प्राप्त करने के लिये गृह कार्य करना आप सभी का कार्य है। इच्छा होगी तो करना। नही है तो ऐसे चलने देना। आप सभी तो मोबाईल रखते ही है। मोबाईल की बात ऐआई अर्थात् याद आया। अभी बापजी ने अच्छी बात की है। ३५ वर्ष से गद्दी पर बैठा हूँ। खूब कठिन है। बापजी के समय सोश्यल मिडीया नही थी

। हमें भगवान मिले है । प्रत्यक्ष भगवान मिले है । इसका स्वाभिमान है।

महाराजने स्वयं हाथ से हाथ मिलाकर इस पद की रचना की है । गद्दी पर बैठाये और सभी से बोले है कि हरिभक्त, संत, हम सभी को आपस मे मिलकर प्रेम से रहना है । हम सभी रहते भी है । अन्ततः भगवान के सहारे यह सब कुछ होता है।

महाराज ने वचनामृत में उदाहरण कम दिये है । गणना से दिये है । सेवकराम से प्रारम्भ होता है । महाराजने सेवा किया । कृत्घनी देखकर उसका त्याग किये । साधारण बात है । लेकिन सोचने वाली बात है । आत्मानंद स्वामी को गुरु माने लेकिन कुछ सिद्धान्त नही मिला । इस लिये उन्हे छोड दिये । हमें परम्परा मिली है जो महाराज ने स्थापित किया है । यह परम्परा कम न हो । अपनी वृत्ति बदले नहि एक दूसरा उदाहरण महाराजने वचनामृत में सोनेका धागा और मोमबत्ती के धागे का दिया है । आप सभी जानते होगे । सोने का धागा हर मौसम में समान रहता है । मोमबत्ती का धागा वर्षा एवं गर्मी मे ढीला पड जाता है । ठंडक में कडक हो जाता है । महाराज ने साधारण रुप से समझाया है । छोटे से छोटा हरिभक्त हो । अशिक्षित मानव हो, सब को पता चल जाता है । निष्ठा सोने के धागे की तरह होना चाहिए । सुख आये दुःख आये मोटेपा दुबले हो, बडे औरनीचा हो आगे बढ़कर पीछे जाये । देव के प्रति निष्ठा बनी रहे । यह बात महाराजने वचनामृत में बताये है । उदाहरण तो हजार बार सुनते है । लेकिन अपनी अर्न्तदृष्टि में रखना है । देव के प्रति निष्ठा कम नहीं होनी चाहिए । गाडी कही रास्ता बदले तो समझले GPS में खराबी है या सिग्नल नही मिल रहा है । या तो बैटरी डाउन हो गयी होगी । चार्जिग करवाना पडेगा । कुछ तो करना पडेगा ।

अर्थात् वास्तव में यह भगवान मिले है । हम तो देवका दर्शन करने आये है । गुरु बनने मे माल नहीं है । बापजीने विस्तार पूर्वक बात की है । बड़े बापजी के शब्दो मे कहे तो गुरु अभी Entertainment (मनोरंजन करना) हो गया है । आप देखे ही...ही....ही..... करके सरकस देखे । खेलदेख कर आ जाते है । हम गुरु तो है नही गुरु बैठे है । सामने सिंहासन पर भगवान कहते है कि हम भगवान नही है । ऐसा निर्मानी पना भी इस शब्दो को अपने प.पू. महाराजश्री के है । लेकिन आप नरनारायणदेव देश के हम सभी के गुरु पद पर है । क्योकि गुरु बनने पर आनंद नही है । चेला सम्भालने पर दुःखी हो जाता है । आपको ज्ञात है कि चेले का मेइटीनेन्स बढ जाता है । दो-चार आदमी को सम्भालना कठिन हो जाता है । तो सम्प्रदाय सम्भालना हो तो शायं तक बिमार होकर बिस्त्रर पर जाना पडेगा । लेकिन भार नही आता है । क्योकि इसके कारण भगवान है । इस पद की गरिमा है । मै रहू या लालजी रहेगे । बापजी थे । देवेन्द्रप्रसाद दादाजी थे । वासेदवप्रसादजी दादा थे । पुरुषोत्तमप्रसाद दादाजी थे । केशवप्रसादजी दादा थे । इस पद की गरिमा कम नही होगी । यह सत्य है । यह महाराज द्वारा स्थापित पद है । शेष व्यक्ति की व्यक्तिगत गरिमा होती है । यह अपने हाथ की बात है । जो देव का बनकर रहेगा । संत-हरिभक्त आदर देगा । संत देव के है।

एकादशी के दिन हमने संतो के साथ मिटींग की थी । इस में एक दूसरी निर्णय हुआ है । जिसे हम पहले से बता दे । अपने देशो की जो प्रणाली चालू है । वह महाराज के समय की नही है । अपने देश है । मानले धोलका देश आये, विरामगाँम आता है । या बाद में ट्रेन्ट सीतापुर देश आता है । अब नक्शा में परिवर्तन करता है । इस लिये कोई रह नही जाये । कुछ गाँव खोजने पर भी नही मिलता है । उत्तर गुजरात पूरा अमेरिका चला गया है । हम कहाँ किसे खोजे ? बैलेन्स आउट करके नक्शा बनाये । इतना क्षेत्र कुछ लोग तथा सभी लोग धर्मादा हेतु पहुँच सके । ऐसा करना है । क्योकि सभी को न्याय मिले । वे मुंबई के हरिभक्त है । अपने वाली और आस-पास के ३२ गाँव है ।

राजस्थान धर्मादा लेने कोई जा नही सकता है । कोई आकर ले जाता है । संतो की बात की है । संत तैयार भी है । जो जो हरिभक्त अहमदाबाद देश के है । वे विशेष कर वहाँ पर धर्मादा लेने जाये ।

लालजी महाराजश्री बीते कल अमेरिका से आये है । शिबिर थी । कुछ दिन हम साथ मे ही थे । नरनारायणदेव की कृपा से अधिक प्रगति हुई है । भगवान का भजन करना है । उनका बनकर रहना है । दूसरा कुछ नही करना है । आश्रय में रहकर भगवान के प्रतिनिष्ठा मे रहे । यह महत्वपूर्ण बात है । १ माला कम होगा तो कोई ईश्यु नही है । कुछ लोग टुकटुकिया लेकर धुसते है । मैने भी पहले कहा है कि महाराज गणित के शिक्षक नही है । गणित के मास्तर भगवान है । १०,००० या ११,००० हो तो अपना दिमाग कही पर धुमता रहता है ।

एक डाक्यूमेन्टरी देख रहे थे । जो ६ से सात मिनट की थी । हमे अच्छी लगी । लगभग भूटान देश १००% बौद्ध धर्मवाला है । साधु हो साध्वी हो यह कुछ वर्ष तक पालन करे । या पूरे जीवन मे लागू करे । १९९९ मे वहाँ की सरकारने निश्चय किया हि हमे टी.वी. की आवश्यकता नही है । सोश्यल मिडीया के उपर से बात करे तो १९९९ मे केबल आया था । छोटा और अच्छा देश है । एक वर्ष के बाद कैमरा लेकर डाक्यूमेन्टरी बनाने के लिये आये । तभी बृद्ध ने कहा कि पहले भगवान की माला कर लेते थे । इसके आने के बाद माला करनार भूल जाते है । यह मुझसे हो रहा है तो बच्चो की क्या दशा होगी ? टी.वी. का इतना प्रभाव है । तो हमारे जेब मे इतना बडा यंत्र पडा रहता है । तो यह शांति से बैठने देगा ? यह विरोध नही वास्तविकता है ।

जो करना हो वह करे । लेकिन भगवान की निष्ठा कम नही हो ये देखना है । आवरण १००० है । इससे अधिक होगा । भविष्य अधिक भयंकर है । भविष्य का चैलेन्ज दिखेगा । तो कल्पना नही करे । लेकिन अपनी निष्ठा देव प्रति अडिग रहे । बच्चे-बच्चियों को अच्छा वातावरण दे । शेष भगवान के उपर है । भगवान का किया ही होता है ।

आप सभी का, अपने परिवार का महाराजश्री खूब मंगल करे । आशीर्वाद के नरनारायणदेव के चरणो मे प्रार्थना है ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

घाटीला गाँव में पूज्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने कुए के जल को मीठा किया

- जे.पी. स्वामी (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)



एकबार आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी अहमदाबाद से कच्छ पधारे थे । कच्छ में भुज, मानकुवा, मांडवी बंदरगाह काला तालाब धमकडा इत्यादि गाँव में घुमकर अहमदाबाद की तरफ आ रहे थे । रास्ते में घाटीला नामक गाँव मे जेठा पटेल एक किसान तथा कई हरिभक्तोने उनका सम्मान किये । गाँव के पश्चिम दिशा में स्थित बडा तालाब के पास खेत में महाराजने अपना डेरा तम्बू उतारे थे । एक दिन आराम करने की ईच्छा सभी की थी । इस लिये सभी लोग आनंदपूर्वक रुक गये ।

दूसरे दिन प्रस्थान की तैयारी चल रही थी । वहाँ के हरिभक्त आकर रुकने का आग्रह करने लगे ।

जेठा पटेलने कहा कि, महाराज ! हम लोगो ने ग्यारह प्रकार के भोजन बनाने का सामान ले रखा है । हम लोगो की ईच्छा है कि आप लोग ग्यारह दिन ठहरे । आप तो अभी से जाने की तैयारी कर दिये है ।

महाराज के मंडल में किसी की रुकने की ईच्छा नही थी । अहमदाबाद से गये अधिक दिन हो गये थे । सभी लोग अपना अपना पक्ष रखने लगे । यहि हम लोग इतने दिन तक रुके तो अपने हाथी, घोडा बैल तो जिंदा ही नही रहेगे ।

महाराजने कहा कि किस आधार पर कह रहे है कि जानवर जिंदा नही रहेगे । क्या कोई बिमारी फैली है क्या ?

''रोग की कोई बात नही है । विरोध करने वाले बोलें'' इस गाँव के चारो तरफ दो-तीन गाँव के अंदर अच्छा पानी नही है । गाँव में एक ही कुआ है । उसका जल समुद्र के जल की तरह अधिक नमकीन है । यह पानी कोई पी नही सकता है । कल आये तभी की बात करे । बैलोने पानी पीया ही नही । एक बैल ने पीया तो वह बैलरेचक की बिमारी से परेशान है ।

किसीने कहा कि गाँव वाले आगे तीन गाँवसे पानी भर कर बैलो से लाते है । हम लोग चार सौ आदमी शुद्ध जल कैसे प्राप्त करेगे ।

दूसरे व्यक्तिने कहा कि महाराज । अषाढ मास लग गया है । यदि विलम्ब किये । वर्षा होने लगी तो अहमदाबाद पहुँचना कठिन हो जायेगा ।

इस प्रकार सभी लोग अहमदाबाद जाने के लिये बोलने लगे ।

सभी की बात सुनकर अभी तक शात बैठे । अयोध्याप्रसादजी महाराजने गाँव के एक हरिभक्त के सामने देखकर पूछे कि ''आनंदा पटेल'' आप क्या कह रहे है ? यह लोग तो ऐसी बात कर रहे है ?

गाँव में पानी का संकट कबूल करते हुए आनंदा पटेल ने कहा कि ''आप लोगो को जितना जल चाहिए उतना हम लोग लायेगे ।

ठीक है, पशुओ का क्या होगा ? महाराज कहे ।

पशुओ के लिये भी हम सभी जल लायेगे । इन लोगो की प्रबल ईच्छा थी की थोडा कष्ट सहन करके यदि महाराज विराम करे तो अच्छा लगेगा ।

लेकिन महाराज के साथ वाले एक - एक आधार देकर कहते थे । कि इस छोटे से तालाब में छोटे-छोटे पानी के स्थल है । सभी लोग रात्रि में वहाँ पर सोये रहते है । ताकि जलकी चोरी नही हो । यह जल अपने पशु भी नही पीयेगे । यह जल पीकरबिमार हो जायेगे । कष्ट में आने से पहले अहमदाबाद के लिये प्रस्थान करे ।

यह सुनकर घाटीला के हरिभक्त उदास हो गये। यह देखकर महाराज भी दुःखी हो गये। उन्होने पार्षदो से कहा कि आज के दिन रुक जाओ। आने वाले दिन में एक कुए का पानी अच्छा हो जायेगा। आप लोग पानी पीना तथा स्नान ध्यान करना। फिर एक ने कहा कारण समाप्त हो जायेगा। शेष हरिभक्तो को नाराज करके आगे नही जा सकते है।

आचार्य महाराज को श्रीजी महाराज का पीठबल था। वे गाँव के हरिभक्तो की मेहमान वाजी के लिये हो बोल दिये।

''यह सब तो सत्य है'' महाराजजी के साथ अखाभाई नाम के एक गरासिया थे। उन्होने कहा यदि वर्षा आ गयी तो क्या होगा ? अहमदाबाद कैसे जायेगे ? यहाँ के कालाखाड के विस्तार में यदि पानी भर गया तो जाने लायक कभी नही रहेगा। उधर की मिट्टी चिकनी है फिसलने का पूरा भय रहता है। वर्षा बोने से किसान काम में लग जायेगे। अतिरिक्त बैलगाडी भी नही मिलेगी।

''आप चिंता नही करे, अखाभाई ! महाराजने धैर्य पूर्वक बोले'' हम लोग जब तक अहमदाबाद मंदिर तक तथा जब तक नरनारायणदेव का दर्शन नही करते तब तक वर्षा नही आयेगी। आती होगी तो रुक जायेगी। फिरभी यदि किसी को जल्दी हो तो यह जा सकता है। शेष में तो ठहरने वाला हूँ। मैं हरिभक्तो को नाराज नही कर सकता हूँ।

घांटीला के हरिभक्तो को पता चला कि महाराज ठहरना चाहते है। उनके बीच के लोग ना नुकूर कर रहे है। महाराजने स्पष्ट आदेश दे दिया। इस लिये सभी लोग नरनारायणदेव भगवान की जय बोलकर आनंद व्यक्त किये।

दूसरे दिन गाँव के लोग। देखे कि वह जल तो मुँह में नही लगा सकते थे। यह मधु के सामान मीठा जल हो गया। गाँवके लोग अति खुश हुए। महाराजने गाँव में रुकने का मन बनाये। तथा मीठा जल की प्राप्ति से पूरा गाँव खुश था। उन्हे दूर से पानी लाने की छूट तथा रातमें सोने का भय समाप्त हो गया।

प्रसन्न ग्रामीणोने उत्सव मनाया। महाराज का स्थान-स्थान परतथा घर घर पर सम्मान किया गया।

महाराज घंटीला छोडकर अहमदाबाद आये। नरनारायणदेव का दर्शन किये। ठीक दूसरे दिन मेघ की कृपा हुई। मुसलधार जलवृष्टि हुई। यह ऐश्वर्य देखकर हरिभक्त अति प्रसन्न हुए।

आगामी उत्सव

श्रावण सुद-८ गुरुवार ता. २०-८-२०२६ दिल्ही मंदिर पाटोत्सव।

श्रावण सुद-११ रविवार ता. २३-८-२०२६ पवित्रा एकादशी।

श्रावण सुद-१५ शुक्रवार ता. २८-८-२०२६ मुकुटोत्सव पूनम, रक्षाबंधन।

श्रावण वद-२ रविवार ता. ३०-८-२०२६ श्रीहरि बालमुकुन्दजीने हिंडोले से उतारना सांजे ५-०० कलाके।

श्रावण वद-३ सोमवार ता. ३१-८-२०२६ फूलकाजली व्रत, बोल चोथ।

श्रावण वद-४/५ मंगलवार ता. १-९-२०२६ नाग पंचमी, जयपुर (राज. चांदपोल बजार) मंदिरनो पाटोत्सव।

श्रावण वद-६ बुधवार ता. २-९-२०२६ रांधण छठ - बलराम जयंती।

श्रावण वद-७ गुरुवार ता. ३-९-२०२६ शीतला सातम।

श्रावण वद-८ शुक्रवार ता. ४-९-२०२६ रात्रे १२ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, जन्माष्टमी, मूली मंदिर समैयो।

श्रावण वद-११ सोमवार ता. ७-९-२०२६ अजा एकादशी।

श्रावण वद-१३ बुधवार ता. ९-९-२०२६ श्रीहरि बालमुकुन्दजी को हिंडोले से उतारे सवारे १०-०० कलाके।

श्रावण वद-१४ गुरुवार ता. १०-९-२०२६ पीठोरी अमास।

श्रावण वद-३० शुक्रवार ता. ११-९-२०२६ शिवपूजन समाप्त।

भादरवा सुद-३ सोमवार ता. १४-९-२०२६ केवडा त्रीज, श्री गणेश चतुर्थी, श्री गणेशजी की स्थापना।

भादरवा सुद-४ मंगलवार ता. १५-९-२०२६ ऋषि पांचम, सामा पांचम।

प्रसादी का गाँव
अंबापुर

- बिपिन पटेल

"भवसंभव भीति भेदनं,
सुख संपतकरुणा निकेतनम
व्रतदानतपः किया फलं,
सहजानंद गुरुं भजे सदा ।"

गांधीनगर से मात्र १२ कि.मी. की दूरी पर अंबापुर गाँव अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । अंबापुर गाँव में ७०० वर्ष प्राचीन वाव स्थित है। यह वाव १५ वी शताब्दी में रुडाबाई वाघेलाने बनवाया था । पाँच मंजिल की रमणीय वाव वर्तमान में आरक्षित स्थलो में आती है । इस वाव के पास ज्योति स्वरुप ''माँ'' जगदम्बा विराजमान है। माताजी का सुंदर मंदिर यहाँ पर है । लोक कहावत के आधार पर महेमदाबाद के लल्लूराम माई भक्त अम्बाजी के दर्शन हेतु जाने पर यहाँ ठहरते थे । तब यह गाँव ''बौद्ध स्थल'' और अपभ्रंस होकर बुडथल के रुप में जाना जाने लगा था । भक्तराज अंबाजी की ज्योति लेकर लौट रहे थे तो गाँव के भाविक भक्तोने अखंड ज्योति का स्वागत- समैया करके गाँव में रखने की विनंती किये थे । तब ''माँ'' के इच्छानुसार तब से यहाँ बिराजमान है । ''माँ'' के नाम पर ''बुडथल'' आज अंबापुर हुआ । यहाँ पर शक्ति रुप में माताजी यहाँ अखंड रुप से विराजमान है । स.गु. महानुभावानंद स्वामी रचित दस गाम गोल में से गोकुल गाँव अर्थात् अंबापुर गाँव । इस गाँव में समाज की बेटिया शादी करके आती है तो साथ में अचरामें मिले घनश्याम महाराज को ले आयी । इस गाँव में धीरे-धीरे ''स्वामिनारायण'' नाम गुंजने लगा । सत्संग का प्रचार-प्रसार बढने लग । समय बीतने पर गाँव में ''स्वामिनारायण मंदिर'' की आवश्यकता पैदा हुई । सभी विशेष लोगो के साथ मिलकर उस समय के आचार्य प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री से मंदिर बनाने के लिये विनंती किये थे । तथा उन्होने आदेश दे दिया । सभी लोग मिलकर गाँव में बनाने का संकल्प कर लिया । आज से ५० वर्ष पूर्व इ.स. १९७६ में श्री स्वामिनारायण भगवान का सुंदर मंदिर बना । मंदिर बनाने के लिये अ.नि. शास्त्री स्वामी हरगोविंददासजी, अ.नि. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी तथा अ.नि. स्वामी माधवप्रसाददासजी ने मंदिर निर्माण तथा मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर अधिक योगदान दिये । निज मंदिरमें श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव और श्री घनश्याम महाराज की सुंदर पटमूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो से पूर्ण की गयी । पूरा महोत्सव भव्य रुप से मनाया गया था । तभी से इस गाँव में सत्संग का प्रभाव दिन-प्रतिदिन व्यापक होता गया ।

सत्संग का व्याप बढने के कारण गाँव के भक्तगणो ने नूतन सिंहासन बनाने का निर्णय किया । औ दस वर्ष पूर्व नूतन सिंहासन में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव और श्री राधाकृष्णदेव की पुनःप्राण प्रतिष्ठा विद्यमान प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया ।

समय का प्रवाह आगे चलता गया । देखते देखते इस मंदिर को बने ५० वर्ष पूर्ण हो गया । अभी मंदिर की स्वर्ण जयंती मनाई गयी । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन अनुसार ता. ६-३-२६ से १०-३-२६ तक सत्संगिजीवन रात्रिय कथा का पारायण का प्रबन्ध किया गया था । शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट) के कथा का पान करवाया था । वैसे तो इस गाँव में सत्संग खूब फूला-फला है। अभी तो अडालज कोबा हाईवे से गाँव जुड जाने से हरिभक्तो को आने जाने की सुविधा हो गयी है। गाँव का पुराना वाव, अखंड ज्योति अंबाजी माता का मंदिर और श्री स्वामिनारायण मंदिर का दर्शन करके अमूल्य लाभ लेने जैसा है।

कालुपुर मंदिर के संतो के लिये मेडिकल सेवा और वस्त्रदान स्वीकारा जाता है

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपरमे रहने वाले संतो के लिये मेडिकल सेवा और वस्त्रदान श्री नरनारायणदेव कोठार आफिस में स्वीकारा जाता है । जो हरिभक्त संतो के लिये उपरोक्त सेवा करने की ईच्छा हो तो वह कोठार आफिस में रकम जमा कराके पक्की रसीद प्राप्त करले ।



दान - पुण्य

- गंगारामभाई एम. पटेल (प्रांतिज)

दान करना अर्थात् देना । अपने पास जो है उसका पूर्ण उपयोग करना । आवश्यकता से अधिक हो तो जरुरतमंद व्यक्ति को अपना अभिमान छोडकर उसकी महिमा बने उसे दान देना चाहिए ।

जो एक हाथ से दान देता है तो वह दोनो हाथो से प्राप्त कर सकता है । दान से समृद्धि में गुणक विधि से वृद्धि होती है । मंदिर में जो भगवान के सामने दो हाथ जोडने का महत्व है । उससे अच्छा एक हाथ से दिये दान का फल होता है । प्रसंशा के लिये दिया गया दान वह दान धर्म नही होता है । समाज में प्रशंसा हो, संस्था में ट्रस्टी पद मिले और नाम का प्लेट ऐसे शर्त से दान मे त्याग-भावना का लोप हो जाता है । इससे अच्छा गुप्त दान होता है । गुप्तदान का महत्व अधिक है ।

जगडूशा नाम के एक दानवीर का नाम इतिहास में स्वणाकिंत है । भयंकर अकाल की वस्था में जगडूशा दान देने समय एक मध्य में पर्दा लगा लेते थे । केवल दान लेने वाले का हाथ नीचे आता था । लेने-देने वालो का मुख नही दिखाई देता था । ताकि वह व्यक्ति शर्म नही करे । इस प्रकार गुप्तदान दिया जाता था । उनका दान इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो में अंकित है ।

दान प्रेम से, हंसते-हंसते उदार हो के देना चाहिए । सुपात्र को दान देना चाहिए । यह उत्तम दान होता है । परिवार को परेशान करके दान नही देना चाहिए । इस लिये गृहस्थ को पूर्ण स्वस्थ मन से दान देना चाहिए ।

सुपात्र को दान देने से समृद्धि बढती है । कुपात्र को देने से दरिद्रता आती है । इस लिये दान सुपात्र को देना चाहिए ।

काशी मे करोडपति सेठ थे । वहाँ पर सदाव्रत चलता था । सदाव्रत लेने के लिये एक आदमी साधु का वेश पहनकर सदाव्रत मे आया था । वहाँ के धन से वह धागा खरीदा तथा मछली पकडने का जाल बनाया । तथा मछली पकडने का धंधा शुरु किया । इस के इस पाप से सेठ का सर्वनाश हो गया । सेठजी किसी महात्मा से पूछे महात्माने बताया कि ''आप के सदाव्रत के धन से मछली पकडने का बनाकर अर्थोपार्जन करता है । इस कारण से आपका अहित हुआ है । ईश्वर आप का अच्छा करेगे ?

एक दिन गंगा नदी के किनारे वाले गाँव से सेठ को पैसा लेना था । तो यह गंगा के घाट पर आया । सूर्यास्त होने के कारण नाव नही मिली । सेठ नदी के तट पर रात भर सोया । उसी समय से हत्यारे रात में वहाँ पर अलाव जलाकर अप रखे रहे थे । तथा बात कर रहे थे कि सेठ के सदाव्रत से पैसा लेकर जाल बनाये । उससे सेठ निर्धन हो गया । वे लोग जब से गये तो सेठ ने जाल को नदी में फेक दिया और नाव मे बैठकर घर आकर ब्राह्मणो को भोज दिया । सेठ पुनः धनवान हो गया।

इस लिये दान सुपात्र को देना चाहिए । इससे इसका अच्छा फल मिलता है ।

टोरडाधाम श्री स्वामिनारायण बीज मंत्र दैनिक होमात्मक यज्ञ - अनुष्ठान

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से अ.मु.स.गु. गोपालानंद स्वामी रचित श्री स्वामिनारायण बीज मंत्र दैनिक होमात्मक यज्ञ अनुष्ठान प्रातः ९ से १२ बजे शायं ३-३० से ६-३० तक होता है । इससे आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्ति मिलती है । दुःख और दरिद्रता तथा कठिनाईयाँ दूर होती है । सभी मनोरथ शुभ संकल्प पूर्ण होता है ।

सम्पर्क : महंत शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी
श्री स्वामिनारायण मंदिर - टोरडाधाम
मो.नं. : ८२३८० ३४८४१

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

(मई-२०२६)

ता.७-०५-२०२६ प.भ. प्रकाशभाई मुलजीभाई काचा तथा काचा टेलर्स (लेस्टर), प्रकाशभाई रमणीकभाई काचा - वर्त. पृथ्वीराज चौहाण तथा कर्नल चौहाण।

(जुलाई-२०२६)

ता. ११-०७-२०२६ श्री सत्संग समाज, श्री स्वामिनारायण प्रसादी मंदिर - हलवद, शास्त्री भक्तिनंदनदासजी स्वामी।

ता. १२-०७-२०२६ अ.नि. प्रभुदास उमेदभाई पटेल - ह. केनोप भूपेन्द्रभाई पटेल - मेमनगर।

ता. १८-०७-२०२६ अ.सौ. अंजलीबेन जीज्ञेशकुमार सिंधव - वणीवाला - वर्त. बोपल - पुत्र यशने अमेरिका का विसा मिलने पर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - जुलाई-२०२६

रू।. १,०१,०००/- श्रीमती विमलाबेन डाह्याभाई पटेल - वर्त. प.भ. डाह्याभाई नारायणदास पटेल, मेहुल डाह्याभाई पटेल, पूरव डाह्याभाई पटेल (माणसा) गुरु पूर्णिमा के अवसर पर।

रू।. ६४,०००/- श्री सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण प्रसादी मंदिर - हलवद, प्रे. शास्त्री भक्तिनंदनदासजी स्वामी।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૯૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन में असुद्ध आचरण कभी नही करना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

प्रत्येक व्यक्ति का अपने जीवन में स्वयं का लक्ष्य होता है। जैसे आज आप सभी का लक्ष्य एकादशी की सभा में आना था। नरनारायणदेव का दर्शन करने का था। इसके लिये आप सभी को अपने अनुसार मार्ग का चयन करना था। नरनारायणदेव तक कैसे जायेगे। उसी तरह हमे जीवन में क्या करना है। जो लक्ष्य होता है। उस आधार पर कार्य करना पडता है। आगे बढने की सभी लोगो की अपनी प्रणाली होती है। यह चयन कर रास्ते पर चलना पडता है। उस नियम का पालन करना पड़ता है। नही तो लक्ष्य की प्राप्ति नही होती है। आप ने उस नियम का पालन करना पडता है। नही तो लक्ष्य की प्राप्ति नही होती है। आप ने यह निश्चित कर लिया मुझे आध्यात्म मार्ग पर चलना है। और समाधि प्राप्त करना है। यह सब प्राप्ति के लिये सबकुछ करे तथा साथ में शराब भी पीये। गलत कार्य भी करे। आनंद करके साथ में अच्छे कार्य करना। अर्थात् मेरा पाप धुल जायेगा। इस प्रकारलक्ष्य की प्राप्ति कभी भी नही होगी। लक्ष्य प्राप्ति के लिये। उस प्रणाली के अनुसार आचरण करनार पडता है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की शुरुआत करे तो भक्ति से शुरु होती है। भगवान तक पहुँचने के लिये सबसे पहले अन्तःकरण शुद्ध करना चारिए। निष्काम भाव से भक्ति करना चाहिए। इससे अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। इस लिये शास्त्र में नवधा भक्ति बनाई थी। ऐसे अनुंसरण से आसानी से चित्त निर्मल होता है। भक्ति से इतनी शक्ति है कि भक्ति सभी सधानो को प्राप्त कर लेती है। सभी को भक्ति रखना पडता है। भक्ति तो चाहिए ही। भक्ति के बिना ज्ञान का योग पचता नही है। भक्ति में स्वयं इतनी शक्ति होती है। भक्ति शक्ति शाली बन जाती है। भक्ति आध्यात्मिक मार्ग का प्रथम सीढी है। क्योकि यह सरलता से की जा सकती है। कोई नया व्यक्ति सत्संग में नया आया हो उसे तुरंत वचनामृत पकडा दिया जाये तो उसे कठिनता का अनुभव होगा। भक्ति करवाना उसे सरल लगेगा। कोई सामान्य व्यक्ति भी भक्ति मार्ग पर चल सकता है। मानले अपने पकडे की सफाई करना हो तो ब्रश-साबुन हो यदि पानी नही हो तो कपडा कैसे साफ होगा। केवल पानी से हम सफाई होगी। इसी प्रकार धर्म, ज्ञान, वैराग्य सब कुछ हो यदि भक्ति नहि हो तो कुछ नही हो शकता है। आप केवल निष्काम भाव से भक्ति करे तो, अन्तःकरण शुद्ध हो जायेगा। अर्थात् भक्ति के माध्यम से धीरे-धीरे धर्म, ज्ञान, वैराग्य सब कुछ जीवन में आ जायेगा। भगवान को प्राप्त करने का आध्यात्मिक मार्ग है। दूसरा कुछ प्राप्त करनां सांसारिक माना जायेगा। सात्विक फल की आशा रखे तो भी सात्विक मार्ग पर चलना नही कहेगे। फल के आशा बिना भक्ति करे। दूसरे तरफ ध्यान दे कर्ता का भाव नही आये। मै मेरे से आसक्ति का भाव आ जाता है। पूरे ब्रह्मांड का संचालन भगवान ही करते है। वही हमारे जीवन का भी संचालन करते है। माता हाथ पकडकर बच्चे से लिखवाती है। बालक को लगेगा मै लिख रहा हूँ। वास्तव में कौन लिख रहा है। 'माता' वैसे मनुष्य को लगता है कि मै ही कर रहा हूँ। वास्तव में भगवान भगवान द्वारा हो रहा है। इसका यह अर्थ नही की मानव खराब कृत्य करता है। उसके भी 'कर्ता-हर्ता' भगवान ही है। भगवान कर्म फल प्रदाता है। यह भगवान करते है। कर्म करने की छूट, ज्ञान, विवेक शक्ति, बुद्धि का सब

कुछ भगवान के मानव को दिया है। और अपने भगवान ने तो अधिक सिखा कर गये है। उसे उपयोग करे यह अपने हाथ की बात है। बिजली का उपयोग पंखा चलाने के लिये कर रहे है या चिपक करप्राण दे देते है। कहने का अर्थ यह है कि आप आध्यात्मिक मार्ग पर चलते है तो ''अशुद्ध आचरण नही रखना चाहिए।'' चरित्र शुद्ध रखने पर आध्यात्मिकता टीकी रहती है। घडे में देह होने परपानी भर सकते है। लेकिन पानी उसमें रुकता नही है। आचरण शुद्ध होने पर आगे बढ सकते है। कुसंग से दूर रहना चाहिए। मानव के मन में एक तत्व होता है जो चारो तरफ से प्रभावित होता है। इस लिये सावधान रहना चाहिए। सच्चे मनुष्य का साथ करना चाहिए। प्रपंच से दूर रहना चाहिए। छलकपट और दूसरा प्रपंच का अर्थ है 'संसार' यहाँ पर हम संसार की बात करते है। जगत प्रभुने बनाया है संसार मानव रचित है। कैसे ? प्रभु रचित, जगत के माध्यम से चित्त मे जबआसक्ति पैदा होती है। तो यह संसार प्रपंच बन जाता है। यह प्रपंच हमें अधोगति की तरफ ले जाता है। ऐसे प्रपंच से दूर रहे। प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग प्रकृति होती है। यह सब मिलकर 'समर्थ' बनता है। संयोग के अनुसार प्रति व्यक्ति का व्यक्तित्व बदलता रहता है। विपरीत अवस्था में ''श्रद्धा'' निष्ठा सब कुछ बदल जाती है। समय के अनुसार चित्त एवम् व्यवहार के उपर प्रभाव डालता है। इस समय पर जो व्यवहार करते है। उसे 'काल धर्म' बन जाता है। अर्थात् काल धर्म का त्याग करना अर्थात् अपने से एकबार भुल हो जाये तो सावधान हो जाना चाहिए। स्वयं पर नियंत्रण करना सीखे। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने पर यह विशेष ध्यान रखना चाहिए। भगवान तक पहुंचने के लिये इन सब नियमो का पालन करना चाहिए। तभी लक्ष्य पाप्त होगा। भगवान आप सभी को ऐसा बल दे। कि हम अनुशासन पूर्वक यात्रा पूरी कर सके।

●

जहाँ पर एकता वहाँ पर प्रेम

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

संप की व्याख्या करे तो प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह वाक्य पहला आता है। वैसे एकता की कोई परिभाषा ही नही है। लेकिन लौकिक दृष्टि से देखे तो जहाँ पर एक से अधिक व्यक्ति या अन्य प्राणी एक दूसरे के साथ मिल जुलकर समूह में रहते है। तो उनके मध्य प्रेम है। प्रेम के बारे में एक दंत कथा सुनाते है।

एक बार सोना और लोहा बाजार में आये। सोना ने लोहे की स्वर्ण बाजार मे ले गया। तभी लोहे ने कहा सोनाभाई आप को काटते है तो आवाज नही आती है। जब कि मुझे काटा जाता है तो आवाज आती है। तब सोने ने उत्तर दिया। हमको काटने वाला लोहा है। जो दूसरे जाति का है। इस लिये आवाज नही आती है। जब कि तुम्हे काटने वाला आपके जाति का है। इसलिये आप को काटते समय इतना शोर होता है।

यह सुनकर लोहा पूरी बात को समझ गया। लोहा अपने समाज में वापस आया। लोहे के सभी साधनो को एकत्र करके इस बात का प्रायश्चित करने के लिये सभी एक अग्निकुंड में चले गये। तब उसे लोहे के रस से एक खम्भा बना। और प्रहलाद को कहा गया कि एकता के प्रतीक खम्भेमे से भगवान नृसिंह प्रगट हुए।

यह तो एक काल्पनिक कथा है। लेकिन जीवन के लिये अधिक उपयोगी है। जहाँ पर मेल होता है। वहाँ पर भगवान प्रगट होते है। जहाँ पर विद्वेष होता है। वहाँ पर दुःख ही आता है। राम लक्ष्मण के एक होने से ही राम राज्य की स्थापना हुई। जब कि कौरवो और पांडवो में एकता नही थी। इस कारण से महाभारत हुआ था। आज भी जिस परिवार मे एकता प्रेम होता है तो कहते है यहाँ राम राज्य है। जहाँ पर द्वेष अलगाव होता है। तो वहाँ महाभारत होता है।

रामानंद स्वामी ने नीलकंठ वर्णी ने भूज से कहे थे। खम्भे से जुडकर रहे। सत्संग में एकता रखकर भीड

सहन करके रहे। ऐसा संदेश दिये थे।

गुणातीतानंद स्वामी की बात में एकता बनाये रखे कहे थे। एक दूसरेमें एकता होने पर अधर्म का प्रवेश नही होता है। इस पर महाराज ने कहा है कि एक राजा ने तीर से भरा तरकस मँगवाया। तथा बोले कि बलशाली भी तकरश को तोड नही सकता है। तब तरकश में से एक तीर निकालकर एक फौजी को दिये। बोले तोडो तो उसने क्षण भर में तोड़ दिया। फिर राजाने सभी उमरावो से कहे यदि एक रहेगे तो कभी भी पराजय का मुख नही देखना पडेगा। राज्य सुरक्षित रहेगा। वह उदाहरण बताते हुए। आप सभी साधु, पाला, ब्रह्मचारी आप लोग एक बनकर रहेगे। तो कोई भी शत्रु हो वह हरा नही सकता है। थोडा भी दोष होने पर सत्संग से बाहर हो जायेगे।

भगवानने पाँच अंगुलियो के उपर उपदेश दिये है। एक दिन चारो अंगुलियाँ एकत्र हुई। ये चार अंगुलिया पत्नी है। अंगुठा इनका पति है। अंगुठा पुरुष है। अंगुलियाँ नारी है। पहली अंगुली (अंगुठे के पास वाली) बोली में सबसे अधिक काम वाली है। ''भूले भटके पथिक तो रास्ता बताती हूँ।'' कोई पूछता है कि सत्संग सभा किधर है। तात्कालीक से ही बताते है। अंगुठे से नही बताते है। यह पहले अंगुली से ही बताते है।

तब दूसरी बोली कि तुम्हारी बात सही है। आप सबको रास्ता बताती होगी। लेकिन मेरे जैसा तुम्हारा कार्य नही है। मैं तो ऐसा कार्य करती हुँ। तुम दुनिया का रास्ता बताती है तो मैं परलोक का रास्ता बताती हूँ। माला मेरे अंगुली पर ही धुमता है। यह मेरा काम है। दूसरी अंगुली ने अपनी प्रशंसा पूरी की। तीसरी ने कहा ठीक है आप दोनो बडी बहन है। लेकिन मे अधिक नही बोलूगी। हम बेकार नही है। आप क्या करती है। मै ललाट पर तिलक लगाने का कार्य करती हूँ। यह बात सत्य है। तु शुभकारी है। तिलक तुमसे ही किया जाता है।

तब छोटीने कहा कि आप सभी बडे है और मै सबसे छोटी हूँ। मै छोटे मानव के काम आती हूँ। कोई भी शिक्षक हो यदि कोई मुझे उपर करता है। तो शिक्षक बाहर जाने देता है। मै शोभा रुप मे हूँ। सभी लोग अंगूठी पहनाते है। चारो मिलकर बोली कि अँगूठा तो सबसे बेकार है। शोभा नही देता है। बात जाने पर खराब लगता है। यह सुनकर अंगुठा नाराज हो गया। इसके बाद शादी का दिन आया। चूरमा परोसा गया। थोडी-थोडी शक्कर डाल दी गयी। घी डालकर चूरमा मिलाने लगे। मिला नही पाये। चारो अंगुलिया थाली में रास करने लगे। चुरमा मिल नही सका। तथा सर्दी होने पर नाक पकडने के लिये अंगुठे की आवश्यकता पडती है। अंगुठे के बिना अंगुलियो को कष्ट होने लगा। तब सभी अंगुलियो ने क्षमा माँगी कि मुझसे भुल हो गयी है। अब घर वापस आओ। बाद में अंगुठा पीठे आया। लेकिन थोडा नीचे बैठ गया। भगवान कहते है। मुठ्ठी भर कर बाजरा भरना हो तो अंगूठा से दाना बाहर नही आता है। इस प्रकार भगवान ने पाँच अंगुलियो के प्रति सुंदर उपदेश दिये है। इस लिये एक रहे। इस प्रकार सत्संगि का कार्य बतादे तो निम्न है।

सं - संयम रखना
प - पक्ष रखे
रा - खुश रहे
ख - माफ करे
जो - देखकर चले

●

धोर गुफा

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

(श्रीहरि वन विचरण गतांक से प्रारम्भ)

रात्रि का समय हो गया था हिमालय के बताने अनुसार वर्णीराज ने गुफा में जब नजर डाले तो सामने प्रंचड जल की धारा बह रही थी। इस जव में वर्णिराज ने प्रवेश किया। इस काली गुफा में जहरीली जन्तु, मगरमच्छ, साँप असंख्य प्राणी में। वह दृश्य देखकर देव लोग हाहाकार करने लगे। जलीय जीव को देखते हुए वर्णीराज आगे बढ रहे थे। सभी लोग सोचने लगे कि अब

क्या होगा । तीन दिन और तीन रात लगातार जलधारा मे चलते रहे ।

''घनघोर गुफा में जिस मे बड़े बड़े मणीधर कुर्म, चर बनाकर दे । मीन मगर, दादुर जिसमे निशंक मन से चल रहे थे । ऐसी घनघोर गुफा से बाहर निकले एक बडी जगह थी । तथा किनारे पर केले का वृक्ष था । तीन दिन से भूखे वर्णीराज शालीग्राम की पूजा किये । बाद में केले का फल लाकर शालीग्राम को भोग लगाने चौथे दिन उन्होने केले का फल खाया । वर्णीराज इन जलचरो, पनचरो, बेचरो, भूचरो जीवो के कल्याण के लिये कठिन यात्रा कर रहे है । आप का अधम-उद्धारक नाम सार्थक है । वर्णीराज !

आज भी हम सब इस गुफा का दर्शन कर सकते हो काफी अंधेरा है । तथा उपर से पर्वत के पत्थरो से जल टपकता रहता है । वर्तमान मे यह गुप्त गुफा के नाम से जानी जाती है । गुप्तेश्वर महादेव का स्वरुप है । आज भी यही स्थिति है । तो दो सौ वर्ष पूर्व वर्णीराज जब इस गुफा मे प्रवेश किये होगे तो क्या स्थिति रही होगी ?

इस गुफा में इतना तीव्र जल प्रवाह था कि इसकी आवाज मे भयंकरता थी । अंदर जाने का कोई प्रयास भी नही करे । उस गुफा में मात्र १२ वर्ष के बाल श्रीहरि ने अनंत के जीवो के कल्याण के लिये किये थे । यह है श्रीहरि की दयालुता ।

ध्यान मूर्ति मेरे प्रिय वर्णीराज ।

ऐसी अवस्था तीनो पर कोई अवतार नही किये है । वे कठिन कष्ट सहन कर रहे है ।

●

ब्रह्मानंद स्वामी को जूनागढ मंदिर करने के लिये भेजना

- भावसार पल्लवीबेन विजयकुमार (लांघणज)

एक दिन महाराज सभा में बैठे थे । तभी समाचार प्राप्त हुआ कि जीवा खाचर बिमार है । महाराज जीवा खाचर को देखने दरबारगढ गये । बाद में मुक्तानंद स्वामी ने कहा जीवा खाचर इस समय महाराज की मूर्ति मे वृत्ति रखे । इस तरह की बात करके स्वामी वापस आ गये । बाद में जीवा खाचर ने देह त्याग किया । महाराज आदि लोदो ने संस्कार विधि किये । दो दिन तकवाह्य यंत्र बंद करा दिये थे । बाद में जूनागढ से पाला आया । महाराजने मंदिर का समाचार पूछे तभी पाला (सेवक) रात-दिन कारखाना चल रहा है । ब्रह्मानंद प्रतिदिन नवाब के कार्यालय में जाते है । बात चीत करके मंदिर मे पीछे आ जाते है । जिस दिन स्वामी कार्यालय नही जाते है तो आदमी भोजकर समाचार लेते है । शहर के नागरदब गये है । तभी तो नागर वैरागी बोलना बंद किये होगे ।

जीणाभाई को महाराजने मंदिर बनवाने के लिये बुलाया । इसके बाद महाराजने ब्रह्मानंद स्वामी से कहा आप जूनागढ मंदिर जाओ । तब स्वामीने कहा की मुझे आप तो कीर्तन करने का आदेश दिये है । मंदिरमे काम तो सभी कर सकते है । ऐसा कहे है । महाराजने कहा आप फल चढा देना । काम करने वाले तथा साधु जितना चाहिए ले जाये । यह करके कीर्तन भी करना तब स्वामीने कहा कि अनंतकोटि ब्रह्मांडो की फल चढा कर बैठे है । कर्ता को और अन्य कर्ता कहलाते है । कही तो मंदिर बनता है । तो कही तोडा जाता है ।

इसके बाद महाराजने ब्रह्मानंद स्वामी को दण्डवत किये । संत एवं पाला लोगो के महाराजने स्वामी के साथ भोजन करवाया । इसके बाद जाने की तैयारी कर रहे थे । तभी जीणाभाई की बहन आदिबाने कहा मुझे मंदिर के लिये पाँचसौ रुपया देना है । महाराजने कहा लाओ । स्वामी को बैठने के लिये महाराजने एक घोडी दी तथा सामान भरके बैलगाडी दिये । और स्वामी को जूनागढ मंदिर की तरफ भेजे । उस समय जेतलपुर से दो संत आये थे । जेतलपुर मंदिर का कार्य दिन रात चल रहा है । इसके बाद महाराज भोजन करने आये । भोजन करके आराम करने चले गये ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में अषाढ सुद-५ गुरु पूर्णिमा ता. २९-७-२०२६ ने बुधवार के दिन विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव संत-हरिभक्त विशाल उपस्थिति थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ आगमन हुआ। संत-हरिभक्तो ने निज मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार से शहनाई के मधुर सुर के साथ भव्य समैया किया गया।

श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर देव के चरण में नत मस्तक दर्शन करके सभा मे विराजमान हुए थे।

विद्वान विप्रो द्वारा स्वस्ती वाचन विधिवत रुप से पूर्ण होने के बाद अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुर महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, शा. स्वामी निर्गुणदासजी, अयोध्या महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी, मूली के महंत स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, ईडर के महंत स्वामी, स्वामी गुरुप्रसाददासजी (जमीयतपुरा), धोलका महंत स्वामी आदि संतो ने और श्री नरनारायणदेव टेम्पल बोर्ड के सदस्य तथा कार्यकारिणीश्रीने समूह आरती किये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजा अर्चना किये थे। आज गुरुपूर्णिमा के यजमान प.भ. डाह्याभाई नारणभाई पटेल (माणसावाले) उनके चि. मेहुलभाई और पूरवभाई पटेल आदि परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजा आरती उतारकर आशीर्वाद लिये थे। हवेली मे भी प.भ. विमलाबेन डाह्याभाई पटेल आदि बहनोने प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की पूजा आरती उतारी थी।

सभा में प.भ. मावजीभाई पिंडोरिया (लंदन) तथा प.भ. संजयभाई पुत्रश्री भाविक (उनावा) तथा वाली मुंबई के अपने हरिभक्तो ने पूजा-अर्चना का लाभ लिये थे।

बच्चो के लिये धार्मिक शिक्षण का पर्ण १-२ अंग्रेजी प्रकाशन का धर्मकुल के कर करकमलो द्वारा विमोचन किया गया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पूरी सभा को आशीर्वाद दिये थे। महंत स्वामी के शिष्य शा. स्वामी सत्यंसकल्पदासजी (नारणघाट) ने सभा का संचालन अच्छे से किये थे। हजारो की संख्या मे भाविक भक्तोने धर्मवंशी की पूजा का लाभ लिये थे। अंत मे प्रसाद लेकर कृतार्थ हुए थे। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में हिंडोला उत्सव

भगवान श्रीहरि ने अपने सम्प्रदाय में उत्सव समैया की अलौकिक प्रथा चलाये है। जो यह ब्रह्मांड की अवधि तक चलता ही रहेगा। किसी भी जीव को इस उत्सव-समैया का अंत काल में याद आने से उसकी मृत्यु सुधर जाती है। और परम पद को प्राप्त करता है।

अषाढ श्रावण माह मे अपने सम्प्रदाय के प्रत्येक हरि मंदिर में ठाकुरजी के सामने अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक प्रतिदिन भव्य हिंडोला सजाकर ठाकुरजी को झूलाया जाता है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वादसे विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में, परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य मे प्रतिदिन नये भव्य हिंडोला को सजाकर दर्शन के लिये रखा जाता है। सेवा प्रेमी हरिभक्त पूरे माह मे हिंडोला मे यजमान बनकर सेवा देते है। उन सब पर पमरकृपालु श्री नरनारायणदेव खुश होते है। अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी तथा संत मंड ने तन, मन, धन से सेवा देकर हिंडोला का आयोजन करके हरिभक्तो को अलौकिक दर्शन कराते है। ठाकुरजी के पूजारी प्रतिदिन भगवान का श्रृंगार करके दर्शन कराये। (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कालोनी (बहनोका) १२ घंटे की अखंड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के शुभ आशीर्वाद से ज्येष्ठ सुद-१०, ता. २४-६-२०२६ के दिन श्रीहरि स्वधाम गमन लीला की स्मृति मे हर्षद कालोनी बहनो के मंदिर मे स्त्री भक्तो ने प्रातः ६-३० से शायं ६-३० तक अखंड षडक्षरी ''श्री स्वामिनारायण'' महामंत्र की धुन करेक श्रीहरि को भोग लगाकर सभी को प्रसाद दी थी। बहनो के मंदिर में भक्ति युक्त कार्यक्रम सदैव चलता रहता है।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) केसर स्नान

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ पूर धर्मकुल परिवारके शुभ आशीर्वाद से ता. २७-६-२०२६ के दिन प.भ. रमेशभाई वी. काथरोटिया के यजमान पद से उनके परिवार द्वारा श्रीहरि का प्रातः पूजा के बाद जेतलपुर से आये महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के हाथो से श्री घनश्याम महाराज का वेदोक्त विधि से केसर जल से स्नान किया गया था।

जेतलपुर के शा. पी.पी. स्वामी ने चंदन की वाघा तथा केसर स्नान की महिमा बताये। तथा सभी भक्तो के ललाट पर चंदन का टीका लगाये। मासिक जनरल सत्संग सभा का आयोजन नियमित पूर्ण हो रहा है।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वर (नरोडा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ पूर धर्मकुल परिवारके आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की हाजिरी मे और स.गु. बलदेवप्रसाददासजी, स.गु. हरिजीवनदासजी की हाजिरी में ता. २८-६-२६ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वर (नरोडा) में सत्संग का प्रबन्ध किया गया था। इस में जेतलपुरधाम से स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और संत मंडल ने सुंदर भगवान की कथा वार्ता का लाभ दिये थे। आदिश्वर (नरोडा) के भक्तो ने अच्छी चव्यवस्था की थी। महिला मंडल ने भोजन स्वयं बनाकर सभी भक्तो को प्रसादरुप से दी थी। महाराज को खारेक का सुंदर अन्नकूट किया गया था। युवक मंडल ने अच्छी सेवा प्रदान की थी। (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वादात्मक आज्ञा से श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा द्वारा आनेवाले मोरली मनोहर देव धोलका धाम के २०० वर्ष के त्योहार महोत्सव के अवसर पर कई सत्संग क्रिया-कलाप किया जा रहा है। इस में पवित्र अधिक मास में ता. ११-६-२०२६ से १५-६-२०२६ तक पाँच दिन का श्रीमद् भागवत कथा शा. प्रेमप्रकाशदासजी ने सुनाया था। हरिभक्तोने सुंदर लाभ प्राप्त किया। ता. २८-६-२०२६ रविवार के दिन बाल मंडल तथा बालिका मंडलने लालोडा मंदिर से सापावाडा मंदिर तक सायकिल यात्रा का सुंदर आयोजन किया गया था। इस में बाल मंडल तथा बालिका मंडल के सभी लोगो ने भाग लिया था। ता. १-७-२०२६ शनिवार एकादशी के दिन सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। इस में गाँव के सभी हरिभक्त कथा का लाभ लिये। ऐसी कई प्रवृत्ति लालोडा मंदिर के संतो के द्वारा की जा रही है। प्रत्येक एकादशी के दिन प्रभात फेरी भी बच्चो द्वारा किया जाता है। सभी प्रबन्ध लालोडा मंदिर के कोठारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा पूजारी स्वामी बालकृष्णदासजी और शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी द्वारा किया गया था।(बलवंत भगत - लालोडा मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर मंदिर में अधिक मास के अवसर पर कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर मे महापवित्र अधिक मास में ता. ११-६-२०२६ से ता. १५-६-२०२६ तक श्रीहरि स्मृति रात्रीय कथा पारायण शा. सत्संगससागरदासजी के वक्ता पद से की गयी इस अवसर पर मूली मंदिर के महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर कथा वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे। (साधु कृपावत्सलदास, शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीता दरवाजा) का १६२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीता दरवाजा) (भाईयोका) का १६२ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर ता. १७-७-२०२६ से ता. २१-७-२०२६ तक निम्नलिखित संतोने कथा वार्ता का लाभ दिये थे। शा. कृपावत्सलदास (मूली), स्वा. सेवावत्सलदास (पूजारी मूली), शा. भक्तिनंदनदास (मूली), स्वा. मंत्रप्रकाशदासजी (मूली) आदि संतोने कथा वार्ता का लाभ दिये थे। ता. २१-७-२०२६ के दिने मूली से महंत स्वामी कृष्णवल्लभदासजी और शा. विश्वप्रकाशदासजी पधारे थे। सभा मे दोनो संतो ने दशांश, विशांश धर्मादा की बात किये थे। सभी को श्रीहरि के आज्ञानसार धर्मादा देने की सूचना दिये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. जगजीवनदास, प्रभुदास सोनी परिवार को संतोने आशीर्वाद देकर उनका योग्य सम्मान किये थे। पूरे अवसर स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी के सुंदर सहकार से पूर्णहुआ। सांख्ययोगी कंचनबा और साथ ही उनका मंडल पधारकर बहनो को सुंदर लाभ दिये। (अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

संवत २०८२-८३ वर्ष के वर्षाऋतु में गाँवो (देश) में कथा करने वाले सूंतो की सूची

देश का नाम	मंडलधारी का नाम
कणभा	स.गु. शास्त्री स्वामी अखंडस्वरूपदासजी (कालुपुर)
बालासिनोर	स.गु. शास्त्री स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (कालुपुर)
आंतरोली	स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा)
लुणावाडा	स.गु. स्वामी आनंदस्वरूपदासजी (कालुपुर)
अहमदाबाद(पश्चीम)	स्वामी भक्तिजीवनदासजी गुरु महंत शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (सेकटर-२)
अहमदाबाद(पूर्व)	स्वामी दिव्यस्वरूपदासजी गुरु महंत शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
मारूसणा-कटोसणा	स.गु. स्वामी अजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (धोलका)
ट्रेन्ट सीतापुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी गुरु स.गु.स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर-अयोध्या)
कपडवंज	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
विहार-गेरीता	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर-खाण)
वडुं-डांगरवा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (कलोल-जमीयतपुरा)
बालवा	स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (उनावा)
भात-कासीन्द्रा	स्वामी नारायणजीवनदासजी गुरु स्वामी मुकुंदजीवनदासजी (कालुपुर)
विरमगाम	स.गु. शास्त्री स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बोपल)
लांघणज	स.गु. शास्त्री स्वामी सचिदानंददासजी (कालुपुर)
मोरवासण	स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिगोविंददासजी (कलोल)
बनासकांठा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कोटा)
पोर-वावोल	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
धमासणा	स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (मोटी आदरज)
प्रांतिज-मोडासा	स्वामी सर्वेश्वरदासजी गुरु स्वामी अखिलेश्वरदासजी (कालुपुर)
साणंद-गोधावी	कोठार हस्तक
सादरा-वासणा	स.गु. शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (कालुपुर)
कुडाल-राजपुर	स.गु. शास्त्री स्वामी वेदांतस्वरूपदासजी गुरु स्वामी गोलोकविहारीदासजी (कालुपुर)
संतरामपुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (बद्रीनाथ)
नलकंठा	कोठार हस्तक
खारवरीया	स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी श्रीहरीदासजी (जयदेवपुरा)
उंझा (सिध्धपुर)	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
शिरोही	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (खाण)

सुरेन्द्रनगर, लींमडी, मोरबी देश में नाम तथा भेट के लिए पार्षद भगवान भगत गुरु मोहन भगत (श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली)

नोट : इस देश में किसी नये गाँव को जोडना हो तो बालु स्वामी से सम्पर्क करे ।

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

जेठ सुद-२ प.भ. अ.नि. सुशीलाबेन सुभाषचंद्र आदेसरा (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणचंद्र शांतिलाल पटेल, प.भ. ललीताबेन नटवरभाई (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. कलुजी कानाजी ठाकोर (अहमदाबाद), प.भ. शारदाबेन कांतिलाल पटेल (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-३** प.भ. अ.नि. मनजी रवजी हालाई (गोडपर-कच्छ), प.भ. बिपीनभाई डाह्याभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. खीमजी शामजी भूडीया (कच्छ-भुज) । **जेठ सुद-४** प.भ. अ.नि. प्रेमबाई मनजी हालाई (गोडपर-कच्छ), प.भ. पार्थ माधवजीभाई पटेल (निकोल), प.भ. अ.नि. हितेषभाई बाबाभाई देवैया (खोडु), प.भ. लीलाबेन दशरथभाई पटेल (न्यु राणीप), प.भ. मेघजी धनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ) । **जेठ सुद-५** प.भ. कंकुबेन देवसी वरसाणी (सुखपर-कच्छ) । **जेठ सुद-६** प.भ. भानुमतीबेन भीमजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वशरामभाई भीमजीभाई ठुंमर (सुरत), प.भ. पुरबाई अरजण केराई (मांडवी- पीपावा-कच्छ), प.भ. अ.नि. घनश्यामभाई मुलजीभाई केवडीया (नाना झिंझावदर) । **जेठ सुद-७** प.भ.अ.नि. पुष्पाबेन घनश्यामभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. जय दिनेशभाई पटेल (धमासणा), प.भ. कंचनबेन जयंतीभाई दोमडीया (अहमदाबाद), प.भ. अरविंदभाई वालजीभाई गुंदणीया (निकोल), प.भ. पारूलबेन (अमेरिकावाले), प.भ. जीवंतिकाबेन लक्ष्मीकांत महेता (अहमदाबाद), प.भ. केतनभाई प्रेमजीभाई पुरोहित (राधनपुर), प.भ. राजन हरेशभाई गोहेल (जुनागढ), प.भ. शैलेषभाई अशोकभाई पटेल (सोजा) । **जेठ सुद-८** प.भ. डाह्याभाई मोहनभाई पटेल (वेडा), प.भ. तीर्थ मनीषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमृतबेन लालजीभाई डाभी (मेमका) । **जेठ सुद-९** प.भ. अ.नि. करशनभाई लखमणभाई राबडीया (सरली-कच्छ), प.भ. हिरबाई वाघजी केराई (भुज-कच्छ) । **जेठ सुद-११** प.भ. मुकुन्दभाई शांतिलाल घडीयाली (हालोल), प.भ. हेत महेन्द्रभाई पटेल (नारणपुरा), प.भ. रामजीभाई लालजीभाई वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. दिनेशभाई माणेकलाल देसाई (बापुनगर), प.भ. ईश्वरलाल परबतभाई राठोड (अहमदाबाद), प.भ. तेजेशभाई अरविंदभाई दोंगा (बोपल) । **जेठ सुद-११** प.भ. अ.नि. मानबाई लालजी खेताणी (मदनपुर-कच्छ), प.भ. प्रेमजी लालजी रवजी खेताणी (मदनपर-कच्छ) । **जेठ सुद-१२** प.भ. अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (सरसपुर), प.भ. बिपीनचंद्र दवे (ओस्ट्रेलीया), प.भ. शकरीबेन डाह्याभाई पटेल (डांगरवा), अ.नि. सांख्ययोगी देवीबेन धनजी गडानी (कच्छ), प.भ. अ.नि. गंगाबेन विरजी गोगारी (कच्छ), प.भ. अ.नि. नानुबेन वालजी पोकार (कच्छ), स्वामी धर्मस्वरूपदासजी (गढडा) । **जेठ सुद-१३** प.भ. वल्केशकुमार हरजीवनदास (गोठीब) । **जेठ सुद-१४** प.भ. भूपतभाई मोहनभाई गौदानी (अहमदाबाद), प.भ. चेतनभाई भगवानभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भगवानभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. राजन चंद्रकान्तभाई बेलाणी (अहमदाबाद), प.भ. श्रेया विरेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. केशरबाई प्रेमजी हरजी केराई (कोडकी-कच्छ), प.भ. रावजीभाई तरसीभाई पटेल (साबरमती), प.भ. रोहित बलर (सुरत), प.भ. राकेशभाई भगवानभाई पटेल (रायसण) । **जेठ सुद-१५** प.भ. विठ्ठलदास कचरदास पटेल (मोखासण) ।

जेठ वद-१ सांख्ययोगी अमरबाई लालजी खेताणी (मदनपुर-कच्छ), प.भ. अ.नि. विरबाई लालजी केराई (मिरजापुर-कच्छ), प.भ. मीराबेन उदयभाई नसीत (निकोल) । **जेठ वद-२** प.भ. दिलीप प्रेमजी केराई (मदनपुर-कच्छ), प.भ. कमलाबेन मंगलभाई पटेल (गोता) । **जेठ वद-३** प.भ. गोपाल लालजी वेकरीया (रामपरवेकरा-कच्छ), प.भ. राजेशकुमार मगनभाई गोलवीया (वडोदरा), प.भ. अ.नि. विशालभाई राजुभाई पटेल (उनावा) । **जेठ वद-४** प.भ. धीरूभाई खोडाभाई धोरी (नाना झिंझावदर), प.भ. डॉ. अशोकभाई विठ्ठलदास मोदी (बापुनगर) । **जेठ वद-५** प.भ. रियांश दिनेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. श्री उमाकांतजी तिवारी (प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरूप गादीवालाश्री द्वारा अहमदाबाद) । **जेठ वद-६** प.भ. अ.नि. शामबाई वेलजीभाई राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. स्मित विरलभाई आदेसरा (मुंबाई) । **जेठ वद-७** प.भ. डाह्यालाल हिरालाल सोनी परिवार (अहमदाबाद) । **जेठ वद-९** प.भ. दिनेशभाई मरघाभाई पटेल (झुंडाल) । **जेठ वद-१०/११** प.भ. कपीलाबेन भूपेन्द्रभाई पटेल (सावली) । **जेठ वद-१३** प.भ. अ.नि. भीखाभाई अंबालाल भावसार (सरसपुर), प.भ. प्रेमबाई वालजी वेकरीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. राजुभाई कानजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ. प्रदिपभाई भीखाभाई पटेल (बारेजा), प.भ. सावन चेतनभाई वोरा (निकोल), प.भ. वसंतकुमार नटवरभाई पटेल (सोजा) । **जेठ वद-१४** प.भ. पीयुषभाई अरविंदभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. शोभना दिनेशभाई पटेल (राणीप), प.भ. चेलाजी अनाजी चौधरी (दांतीवास-वाली) । **जेठ वद-३०** प.भ. अ.नि. वालबाई भवान वरसाणी (सामत्रा-कच्छ) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji





गुरु पूर्णिमा के दिन पर अपने अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो के समक्ष पेंडा का अन्नकूट किया गया था। उसका दर्शन हजारो हरिभक्तोने किया था।





नोक्सविल (अमेरिका) आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर में सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।



अयोध्या मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन।





प्रति वर्ष अपन कालुपुर मंदिर में कलात्मक हिंडोला का प्रबन्ध किया जाता है। उसी प्रकार इस वर्ष में भी हिंडोला का भव्य आयोजन किया गया।





प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से अपने मंदिर द्वारा अहमदाबाद और मालपुर आदि अनेक क्षेत्रो में विद्यार्थीयो को कापी वितरण किया गया।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026









गुजरात को हरियाला बनाने के संकल्प को फलीभूत करने हेतु धर्मकुल के संकल्पसे पीपलज– गांधीनगरमें प.पू.बडे महाराजश्री, प.पू.गादीवालाश्री, प.पू.श्रीराजाश्री एवं प.पू.लालजी महाराजश्री द्वारा ६ लाख वृक्षोका वृक्षारोपण कीया गया।



नये सालके केलेन्डर प्रकाशित हो चुके है। शीध्र प्राप्त कर ले

अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश द्वारा प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा उन्होने पसंद किये गये अलौकिक दर्शनीय सुंदर नये वर्षका केलेन्डर प्रकाशित हो गया है। **(अपने छोटे–बडे मंदिर में यही केलेन्डर बनेगा कुछ परिवर्तन नहीं किया जायेगा।)**

जो हरिभक्त केलेन्डर बनाना चाहतै है वह नीचे दीये हुअे नंबर पर संपर्क करें।

मंदिर के लिये

किंमत रु १२–००

स.गु.बालु स्वामी : ९४२७०७०३७१

हार्दिकभाई : ७७७९०५२०४८

विज्ञापन के लिये

किंमत रु १४–००

विपुलभाई : ९७२५४४९२८८

प्रयागभाई : ९४२९०६७५८४

टिप्पणी : केलेन्डर मिनिमम ३०० और किसीभी अेक डिझाईन का ही करना होगा।

Praful Kharsani